Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री – जीवन के विभिन्न आयाम

**प्रकाश वारकले***

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

**प्रस्तावना –** छात्र जीवन से ही चित्राजी ने लेखन की शुरूआत की है। अपने पिता के सुख–समृद्ध जीवन को त्यागकर उन्होंने अपने पति अवधनाराण मुद्गल के साथ बंबई जैसे महानगर में झोपट्टी में जीवनयापन की कल्पना में ही उन्हें अधिक प्रिय और श्रेयस्कर प्रतीत हुआ। अत्याधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण जीवन को अस्वीकार करके महानगरीय जीवन के परिवेश को स्वीकार कर लिया है। परिवेश के बदलाव के साथ रिश्तों में आ रहे परिवर्तनों को सहज रूप से स्वीकार कर लिया है।

रिश्तों में आ रहे अजनबीपन युवा पीढी का मोहभंग और मानवीय रिश्तों को लेकर मानसिक उलझनों तथा जीवन–संघर्ष से जूझते महानगरी व्यवस्था में आम बात है।

**चित्राजी का समस्त साहित्य समकालीन यथार्थ समस्याओं के रूप में केन्द्रित रहा है।** उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगरीय जीवन के अजीबोगरीब उतार–चढाओं को देखा है। मात्र पैसा प्रेम का स्थान नहीं ले सकता। 'गेंद' कहानी में वृद्धाश्रम में रहने वाले सचदेवा का बेटा विनय लंदन में नौकरी करता है। विनय की पत्नी डॉक्टर है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् भरा पूरा परिवार होने के बावजूद अकेले जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। वहीं छोटे से बिल्लू को रिश्तों की परख नहीं है इसलिए अपने दादा को भी अंकल कह कर ही संबोधित करता है। शहर नाम के सीमेंट के इस जंगल में मनुष्य की मनुष्यता खो रही है जहाँ बच्चे ही अपने माँ–बाप से विमुख हो रहे हैं।

स्वाधीनता के बाद भारतीय समाज औद्योगीकरण के फलस्वरूप विशाल महानगरों का निर्माण हुआ, जिसने गाँवों की सभ्यता और संस्कृति को अभाव, घुटन, अकेलापन, अपराधीकरण जैसे समस्याओं को जन्म दिया। महानगरीय आदमी दूसरों का ऊपर उठाने और अधिक कुछ पाने की कोशिश में भागते फिर रहा है जिसकी संवेदनशीलता और ईमानदारी रफू हो गई।

लेखिका ने महसूस किया कि पाश्चात्य सभ्यता का आकर्षण एवं संक्रमण अन्धानुकरण तथा फैशनपरस्ती में डूब गया परिणामस्वरूप पीढियों में बढता अन्तर, दिखाई देने लगा। महानगरीय चकाचौंध के पीछे अंधकार से बेखबर ग्रामीण व्यक्ति अपनी परंपरा तथा परिवेश से कटकर शहर की और भाग रहा है। इस स्थितियों के कारण महानगरीय जीवन में विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ बढती रही।

साहित्य के क्षेत्र में कहानी का स्वरूप भी बदलता रहा है। भीतर ही भीतर उसने झूठ, फरेब, शोषण, भ्रष्टचार एवं अन्याय की ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है कि जिसमें हमारे मूल्य और विश्वास का दर्द घुटने लगा है।

समकालीन हिन्दी कहानियों में महानगरीय चित्रण के रूप में नगरी जीवन की अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न की है।

गाँव का आर्थिक ढाँचा कृषि पर निर्भर है जबकि नगर का ढाँचा पूरी तरह से नितांत भिन्न स्वरूप का है। नगरी जीवन में आर्थिक दृष्टि पर ही अनेक विसंगतियाँ दिखाई देती है। महानगरों में सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों में तेजी से क्षरण होने लगा है। जिनमें राष्ट्रीय एकता, सामाजिक उत्थान, देश प्रेम आदि मूल्य घटते गये इसके स्थान पर स्वार्थ और अवसरवाद ने जगह ले ली है।

महानगरों में जीविका एवं आवास की समस्या से स्वंय व्यक्ति उलझ रहा है। लेखिका चित्रा मुद्गल ने समाज में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को सिद्धांत से अनुभव किया है। मध्यवर्गीय समुदाय की रचनाओं को उन्होंने अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। चित्राजी ने समाज सेविका के रूप में कारखानों से जुड़ी स्त्रियों के संगठन से जुड़कर उन्होंने स्त्री समस्याओं को हल करने का काम किया है। विशेष रूप से झोपड़ीपट्टी के श्रमिक लोगों में चेतना पैदा करने की दृष्टि से स्त्री संगठनों से गहरा लगाव रहा है। चित्राजी ने सामाजिक जीवन की प्रतिबद्धता के साथ तथा जीवंतता के साथ उजागर किया है।

महानगरीय जीवन के निम्न और मध्यवर्गीय नारी चरित्रों को लेकर उनके अन्तरद्वंद्वों के साथ विश्लेषित किया है। उन्होंने नारी जीवन के यथार्थ को बड़ी गहराई के साथ महसूस किया है। चित्राजी ने 'अपनी वापसी' कहानी में शकुन नामक प्रोढा की कथा में ढलती उम्र में शारीरिक शक्ति क्षीण होने पर परेशानिया सहकर बच्चों और पति के व्यवहारों को उपेक्षित करती है। 'दरमियान' में मध्यवर्गीय नौकरी पेशा नारी की परेशानियों का उल्लेख किया है। 'लिफाफा' कहानी में पुत्र–पुत्रियों के भेदभाव की चर्चा की है।

'इस हमाम में कहानी संकलन में भूख', फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती, 'चेहरे', 'अपने गिरेबान' जैसी रचनाओं में बंबई महानगर की निम्न समाज की नारी का त्रस्त जीवन कथा व्यक्त की गई है जिसमें झोपड़ीपट्टी में रहने वाली कामवाली बाई का यथार्थ चित्रण उल्लेखनीय है। 'फातिमा बाई कोठे पर नहीं रहती' रेड–लाईट एरिया में रहने वाली वेश्याओं का चित्रण किया गया है। 'अपने गिरेबान' में उच्च वर्ग की नारियाँ खेल–खेल में अपनी पत्नियों के साथ दैहिक संबंधों में अपना मनोरंजन ढूंढती है।

'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' संकलन में 9 कहानियाँ है। जिनमें मुआवजा', 'सौदा','अभी भी','ताशमहल', 'प्रमोशन','हस्तक्षेप' जैसे कहानियाँ उल्लेखनीय है।

'मामला आगे बढेगा' कहानी संग्रह में 12 कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ

महानगरी जीवन से संबंधित है।' 'जिनावर' कहानी 7 कहानियाँ है तथा 11 लघु कथाएँ हैं। जिनमें प्रमुख रूप से समाज और लोकोपवाद आदि कहानियाँ पठनीय है।

'लपटे' कहानी संग्रह में 7 कहानियाँ और 4 लघु कथाएँ हैं। चार लघुकथाओं में जातिवादी जड़ों का चित्रण है।

'बयान' कहानी में 29 लघुकथाएँ है जिनमें विभिन्न चरित्रों का उल्लेख हैं।

'आदि-अनादि' भाग 3 में 59 कहानियाँ है जो विभिन्न विषयों से संबंधित है।

कुल मिलाकर 184 कहानियाँ तथा 28 लघु कथाएँ हैं। जो अनेक विषयों से संबंधित है। इनमें 'अभी भी', 'लकड़बग्घा' 'लक्ष्मी', 'जिनावर', आदि कहानियाँ पठनीय है।

'केंचुल' कहानी में कमला अपने गुजारे के लिए शराब बनाकर बेचती है। वह लड़ना चाहती है पर स्त्री की त्रासदी को अच्छी तरह से जानती है। नारी अपने सम-सामयिक समाज में अपनी अस्मिता और सुरक्षा के लिए जी तोड़ प्रयत्न करती है।

'प्रेत योनि' में नायिका अपने परिवार के दोहरे आचरण से आश्चर्य चकित है। कुछ कहानियों में खून के रिश्ते भी मानवीय संबंधों में अपनी निरर्थकता प्रदर्शित करते है।

कुछ कहानियों में भावुक चरित्रों की संवेदनाओं का उल्लेख किया गया है।

मिनाक्षी मिश्रा ने भी 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री जीवन की विविध छबियों का चित्रण किया है।

कुछ कहानियों में ग्रामीण विधवा स्त्री की व्यथा, निम्नवर्ग की पारिवारिक समस्याएँ तथा मधु नाम की दुर्घटनाग्रस्त अपाहिज नारी की दशा का चित्रण किया है। बयान' नामक कहानी में अनिता गुप्ता नाम की लड़की का बलात्कार की शिकार होने से बचने की कथा व्यक्त की है। 'बाघ' कहानी में अवसरवादी मध्यमवर्गीय समाज का चित्रण किया गया है। 'रिश्ता' लघुकथा में मार्था' नामक नर्स का चित्रण किया गया है। जिसमें हर मरीज की यमाँ बनकर उसकी सेवा करती है। मानदण्ड' में दलित स्त्री की 'छुआ छूत' से परेशान नारी का चित्रण किया गया है। प्राध्यापक कस्बे आमघाली किशनराव ने अपने प्रबंध में चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में व्यक्त नारी जीवन संघर्ष में चित्रा जी के कथा साहित्य में नारी संघर्ष की कथा दी है। सफेद सोनारा' कहानी में एक अध्यापिका को प्रेम में धोखा मिलता है। 'तकिया' कहानी में चित्रा जी ने एक नौकरीपेशा औरत का चित्रण किया है जिसका एक छोटा बच्चा है जिसके कारण उसे नौकरी में वक्त नहीं मिल पाता इसलिए वह आया के भरोसे बच्चे संभालने का काम करती है। 'हथियार' कहानी में नौकरी करने वाली युवती की कथा है, जिसके माता-पिता अलग रहते हैं। उसकी माँ अपने दूसरे पति से त्रस्त हो चुकी है। युवती को न तो अपनी माँ के पास रहना है, न पिता के साथ।

'जब तक विमलाएँ हैं' कहानी में विमला अपने औलाद की नाइंसाफी के विरुद्ध आवाज उठाती है। 'अभी भी' कहानी में शिल्पा ससुराल वालों के सामने विद्रोह करती है। 'प्रेतोयोनि' कहानी में लड़की घर में नजरबंद है। क्योंकि उसकी माँ नौकरी करने अन्यत्र जाती है और बच्चे को घर में नजरबंद कर नौकरी में चली जाती है।

नौकरीपेशा कहानी की ललिता को अपने पति की जिम्मेदारी वहन करना पड़ती है। ललिता अपने बॉस को भोजन के लिए आमंत्रित करती है तब ललिता का पति बॉस के प्रति संदेह करता है। ललिता का पति ललिता को संदेह की दृष्टि से ही देखता है।

'मोर्चे पर' कहानी में रिना नाम की विधवा भी अपने पति सुदीप के शहीद होने के बाद तनाव से घिर जाती है। 'स्टेपनी' में नौकरीपेशा नायिका आया की गृहस्थी संभालने के साथ नौकरी भी करती है इसलिए उसे नौकरी और गृहस्थी दोनों की जिम्मेदारी वहन करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है पति के आंतक को उसे चुपचाप सहना पड़ता है। 'सौदा' कहानी में अनपढ मासूम ग्रामीण स्त्री गेंदा को नौकरी का लालच देकर दलाल उसे बाजार में बेच देता है।

'फातिका बाई कोठे पर नहीं रहती' कहानी रेड-लाईट ऐरिया की वेश्याओं की यातना भरी जिंदगी का चित्रण किया गया है।

'रूना घर आ रही है' कहानी में रूना एक श्रीमन्त आदमी से प्रेम करती है। उसे विवाह की मंजूरी अभी मिल गई है, किन्तु एक शर्त पर शादी को टाल दिया जाता है। शर्त यह है कि बुआ की शादी होने पर ही रूना की भी शादी होगी। इस शर्त पर रूना टूट जाती है।

'लाक्षागृह' की नायिका नौकरी करती है। नायिका सुन्दर नहीं है। उसकी अन्य बहनों की शादी हो जाती है किन्तु नायिका असुन्दर होने से अविवाहित रह जाती है। भूख' कहानी की नायिका लक्ष्मा अपने छोटे बच्चें को भी भिखारिन को देने में तैयार होती है।

इस प्रकार चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी के संघर्ष को व्यक्त किया गया है। अक्सर यह देखा गया है कि स्त्री के विवाह में कई बार किसी न किसी कारणों से वैवाहिक संबंधों में रूकावटें डालने का हथकंडा अपनाया जाता है। वस्तुत: आर्थिक स्थिति के कारण ही नारी को संबंधों में रूकावटें शुरू होती है।

**चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में भावबोध -** यथार्थ के प्रति वर्तमान दृष्टिकोण, स्त्री-पुरुष संबंधों में परिस्थितिजन्य बदलाव, काम संबंधों में दृष्टि, महानगरी जीवन की प्रवृत्तियाँ, भूलें और मानवी संबंधों में परिवर्तन, वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश के प्रति जागरूकता आदि संदर्भ में वैचारिक दृष्टिकोण भावबोध के अंतर्गत समाहित होते हैं। आधुनिकता के नाम पर साहित्य में दमित वासनाओं और यौन कुंठाओं की विकृतियाँ आज के युग में उभरने लगी है।

चित्रा मुद्गल की कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की द्वंद्वात्मक स्थितियों का चित्रण किया गया है।

महानगरीय परिवेश जैसी परिस्थितियों में महानगरीय निवासियों की जीवन शैली, उनकी समस्याएँ, संस्कृति आदि महानगरीय निवासी बोध कहलाता है। मानवीय सामाजिक व्यवस्था का वृहत् रूप महानगर तक जाता है।

महानगर की विभिन्न विशेषताओं और विषमताओं को लेकर महानगरी जीवन से जुड़े विविध पहलुओं का अध्ययन ही महानगरी बोध के दायरे में आता है।

कहानियाँ अपने समय के यथार्थ को कहीं न कहीं अभिव्यक्त की जाती हैं। कहानियों का स्वरूप, किरदार, वेशभूषा, खानपान,उपमा, प्रतिमान, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सूचना आदि बिन्दु यथार्थ ज्ञान के दायरे में व्यक्त होती है।

रामायण, महाभारत काल में पूर्ण व्यवस्थित समाज के दर्शन होते हैं।

ऋग्वेद काल से लेकर सत्यनारायण की कथा तक पता चलता है कि हाँ बड़ी-बड़ी नावें बनाई जाती थी और परिवहन का प्रचुर मात्रा में व्यापार तथा आवागमन के लिए उपयोग होता था।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ उस युग का ऐसा यथार्थ चित्रण करती है कि पढने वालों के सामने घटना जीवन्त प्रतीत होती थी।

चित्रा मुद्गल की 'केंचुल' कहानी में बंबई हाशिये पर रहने वाले वर्ग से सम्बन्द्ध कहानी है। इस वर्ग के रहन-सहन, तंगहाल जिंदगी और नई पीढी के लड़के-लड़कियों में अपने भावी जीवन के संबंध में निर्णय लेने की क्षमता का अंकन किया है।

उनके लेखन में 'सफेद सिनारा' (1967), 'दशरथ का वनवास' (1973), 'जहर ठहरा हुआ'(1990), 'लाक्षागृह' (1982)।

'दशरथ का वनवास' में एक ऐसे पिता को अपने पुत्र के प्रति संवेदना व्यक्त हुई है। जो उनसे संबंध तोड़ चुका है। यहाँ तक कि उनके श्राद्ध तक में शामिल नहीं रहा। इसका कारण है, बचपन में पुत्र के प्रति पिता का कठोर व्यवहार, तो क्रूरता की हद की तरह असंवेदनशील था। पिता की मृत्यु के बाद पुत्र को एक पार्सल मिला, जिसमें वही साइकिल बंधी हुई है, जिसके एक दिन चुपके से सवारी करने में बड़ी बेरहमी से पीटा गया।

अग्निरेखा में एक बीमार लकवाग्रस्त स्त्री की कुंठा का चित्रण किया गया है। उसे लगता है कि वह छोटी बहन के प्रति ईर्ष्यालु हो गई है। वह परिचर्चा के बहाने उसके पति पर डोरे डाल रही है। यह कथा यद्यपि मनोवैज्ञानिक है लेकिन समकालीन जिंदगी में इसका कोई विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं दिखाई देता है।

इस दौरान चित्रा मुद्गल की 'पाली का आदमी', 'शिनाख्त' हो चुकी है' 'केंचुल', 'लाक्षागृह', 'बावजूद इसके', मामला आगे बढेगा', 'अभी', 'इस हमाम में जैसे उल्लेखनीय कहानियाँ आई।

'पाली का आदमी' में एक ऐसे व्यक्ति की परेशानी का चित्रण किया गया है, जो बचपन की शादी और उससे हुई कन्या को नकार कर नगर में यफैक्टरी में उच्च पद पर कार्यरत रहा। और उसने दूसरी शादी कर ली। उसने दूसरी पत्नी से यह तथ्य छिपा रखा है। पत्नी किसी स्कूल या कॉलेज में पढाती है। पति को फैक्टरी की दूसरी पाली में काम करना पड़ता है जिसका एकमात्र मकसद उत्पादन बढाना है। पत्नी से कम मुलाकात होने के बावजूद उसका जीवन एक ढर्रे पर चल रहा है। इस बीच उसकी पहली पत्नी से हुई बच्ची बड़ी हो चुकी है, जिसका विवाह होने वाला है। वह अपने पिता को एक मार्मिक पत्र लिखती है कि वह उसे आकर कम से कम आशीर्वाद तो दे जाए। उसकी बहन भी उसे पत्र लिखती है कि बेटी के विवाह में आर्थिक सहायता देकर अपना पूरा फर्ज करें। इस पत्र को पाकर वह पसोपेश में पड़ जाता है।

'शिनाख्त हो गई है' में किसी महानगर में एक बच्चे के समय पर स्कूल से न लौटने पर उसकी माँ की मानसिक चिन्ता बढ जाती है। 'केंचुल' कहानी में तंगहाली में जिंदगी अपने भावी जीवन के बारे में कुछ निर्णय लेने की क्षमता प्रदर्शित करता है।

'लाक्षागृह' की लड़की असुन्दर होने से विवाह न कर पाने में अक्षम है। इस कथा की सारी समस्या औरत होना है क्योंकि विवाह के लिए औरत का सुन्दर होना जरूरी है।

'एक लंबी कहानी' में एक पुरुषवादी मानसिकता के शिकार, मौज-मस्ती का जीवन जीने वाले और स्त्री को भोग सामग्री मानने वाले क्रूर पति के विरुद्ध उसी पढी लिखी, संवेदनशील पत्नी के विद्रोह और उसकी ज्यादतियो सह न पाने पर स्वतंत्र जीवन जीने का निर्णय लेती है।

'मामला आगे बढेगा अभी' में एक घरेलू नौकर तथा अभिजात वर्ग के दाम्पत्य जीवन के विरोधाभासों का अंकन किया गया है। अन्याय करने वाले मालिक के प्रति प्रतिशोध की भावना व्यक्त की गई है।

'इस हमाम में' कहानी में बतलाया गया है कि नारी किसीभभी वर्ग की हो उसे पति के अत्चार को सहना ही पड़ता है। निम्नवर्ग की औरतें तो बिना किसी झिझक के पति को तंग कर दूसरा विवाह कर लेती है। किन्तु उच्च वर्ग की औरतें ऐसा नहीं कर पाती। क्योंकि वे पति की आर्थिक स्थिति पर जींदा है। लेखिका का कहना है कि स्त्रिों का स्वतंत्र होने के लिए आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना जरूरी है।

'जहर ठहरा हुआ', 'रूना आ रही है', 'अनुबंध' और त्रिशंकु में कहीं सास बहू के संबंधों का तनाव कहीं पुरुष की सोच है कि उसे पुत्री के रूप में संतान नहीं चाहिए। एक दिन उसे पता चलता है कि उसकी माँ और पत्नी साथ-साथ गर्भवती है। जिससे वह लज्जा का अनुभव करता है।

त्रिशंकु में झोपड़ीपट्टी में रहने को विवश जिंदगी जीने वाले समाज का चित्रण किया गया है जिसमें पति रिकशा चलाता है और पत्नी घर में सफाई का काम करती है।

'सौदा' कहानी में दलित वर्ग की एक स्त्री के अपने ही गुंडे पति के विरुद्ध खड़ी होने के संकल्प का चित्रण है।

चित्रा मुद्गल की कहानी 'भूख' बंबई की झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली नितान्त गरीब लोगों की कहानी है, जो भूख की पीड़ा झेलने के लिए शिशुओं को भिखारिनों के वेश में,रेल्वे स्टेशनों पर जेब काटने वाली,सहायता देने वाली औरतों का चित्रण किया गया है।

'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' में निम्नवर्ग की एक ऐसी माँ की भावनाओं का चित्रण किया गया है, जिसके अपंग बेटे को बड़े तामझाम के साथ पहिया गाड़ी दी जाती है, पर दूसरे ही दिन बहाना बनाकर वापस ले ली जाती है। इस कहानी में एक निर्धन माँ की भावनाओं का मार्मिक अंकन किया गया है। इसके साथ ही नेताओं और व्यवस्था के छद्म भरे नाटक का भी पर्दाफाश किया गया है।

'जिनावर' में एक गरीब तांगे वाले की दयनीय पारिवारिक स्थिति और अपनी घोडी के प्रति गहरी संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति की गई है। 'अपने गिरेबान में बंबई के अभिजात समाज की कथा है जहाँ क्लबों में 'वाइफ रूवैपी' में अपनी पत्नियों की अदला-बदली कर मजे लूटने का खेल खेला जा रहा है।

चित्रा मुद्गल की कहानी 'ऐंटिकपीस और नीले चौखाने वाला कम्बल' कहानियों में मध्यम वर्ग की बेचारगी का चित्रण किया गया है। 'ऐंटिक पीस' कहानी में माँ अपनी बहन की समृद्धि से इतनी प्रभावित है कि सदा उसके साथ उसके सामने बिछी रहती है। उसे खुश रखने के लिए वह अपने पति और बच्चों तक कीपरवाह नहीं करती। इसकी पढी-लिखी बेटी, जो बेकारी से मुक्ति पाने के लिए जूझ रही है, यह सब पसंद नहीं करती पर माँ की अपने को बड़ा दिखाने की कुंठा इतनी जबरदस्त है कि घर में पहले से पड़ी चीजों उन्हें उपहार देने के लिए बेचैन रहती है। 'नतीजा' कहानी में सेक्स का धंधा को करने वाली औरतों की बच्चियों के एक होम का चित्रण किया गया है, जिसकी संचालिका का अपना सर्वस्व समर्पित करने के बाद भी उसकी किसी स्कूल की भर्ती परीक्षाओं में असफलता को लेकर निराशा ही हाथ लगी।लेखिका ने संचालिका की हताशा का बहुत अच्छा अंकन किया है।

'बेईमानी' में प्लेटफार्म पर रूकी ट्रेनों में पत्रिकाएँ बेचने वाले हॉकरों की मजबूरियों का चित्रण किया गया है।

'जगदम्बा बागू गाँव आ रहे है' में संकलित कहानियों में 'सौदा', 'अभी भी', 'ताशमहल', 'प्रमोशन' आदि कहानियों में केवल पढी-लिखी कामकाजी महिलाओं की दशा की ही स्थिति नहीं दशीयी है अपितु अनपढ नारी भी अपनी अस्मिता के प्रति सचेत और जागरूक है तथा रूढ़ संस्कारों और अवमूल्यन को झटक कर सुस्पष्ट रूप से इस अवधि की कहानियों में भी हाशियों पर जीने वाले पात्रों का चित्रण किया है।

उनकी कहानियों में ईर्ष्या-द्वेष और स्वार्थपूर्ण पारिवारिक संबंधों का चित्रण बहुत उत्तम रीति से व्यक्त किया गया है। इस कहानी में भी 'बाघ' अपनी केन्द्रीयता में सांप्रदायिकता विरोधी कहानी व्यक्त की गई है।

इस प्रकार चित्रा मद्गल की कहानियों में हर जगह नारी की बेदर्दी, बेरहमी से सौंद कर चलने वाला, उसकी मजबूरियों का उठाने वाला, उनके प्रतिभा-कौशल को और कुंठित करने वाला, उसे देवी कहकर विभूषित करने और बाद में मार-पीट करने वाला पुरुष वर्ग का ही व्यक्ति होता है। इतना ही नहीं परिवार, बच्चों और घर की तमाम जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाली घरेलू और कामकाजी महिलाएँ घर की आर्थिक बैसाखी पकड़ने वाली नारी वर्तमान में ही अपने अस्तित्व की सार्थकता को प्रश्नचिन्ह के रूप में ही अंकित कर पा रही है।

नारी अस्तित्व की लड़ाई में वे कई कारण है कि सारे दुश्चक्र प्राय: नारी के साथ ही जुड़ते हैं और हर बार उसे ही दोषी ठहराया जाता है। कोई भी अन्य जीवधारी इतना पापी नहीं, जितनी नारी है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. चित्रामुद्गल नतीजा-सेक्स का धंधा करने वाली
2. चित्रामुद्गल नासिरा शर्मा-पत्थर की गली
3. चित्रामुद्गल कृष्णा अग्निहोत्री- रमकलियां
4. चित्रामुद्गल लेन दलित परिवार का चित्रण पृ 137
5. चित्रामुद्गल भूख- बंबई की झुग्गी झोपडियो के जीवन चरित्र की कथा
6. चित्रामुद्गल अपने अपने गिरेबान- बंबई के अभिजात समाज की कथा पृ 159
7. चित्रामुद्गल फातिमा बाई कोठे पर नहीं रहती-वेश्या जीवन की कथा पृ 196
8. चित्रामुद्गल जगदम्मा बाबू गांव आ रहे है- 1982, पृ 380
9. चित्रामुद्गल एक काली एक सफेद-पति-पत्नी के संबंधों की कथा
10. चित्रामुद्गल ऐंटिक पीस- मध्यम वर्ग के परिवेश की कथा

**********